संपादक का नोट

मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों प्रभु की स्तुति करो। मैं इस महीने के संपादक के नोट की शुरुआत प्रार्थनाओं और इस आशा के साथ करती हूँ कि आप सभी सुरक्षित हैं और हमारे स्वर्गीय पिता के शक्तिशाली हाथ में रहना जारी रखेंगे।

यशायाह 26:3 ''जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।'' हमें अपने परमेश्वर पर अपना विश्वास और भरोसा रखना सीखना चाहिए जो इस पृथ्वी पर हमेशा के लिए शासन करते है। मनुष्यों में विश्वास और भरोसा केवल भय की ओर ले जाएगा, और हम अपनी शांति खो देंगे क्योंकि मनुष्य इतना अस्थिर है। जबकि, हमारा प्रभु वह है जिस पर हम अनंत काल तक निर्भर रह सकते हैं!

भजन संहिता 144:13 ''जब हमारे खत्ते भरे रहें, और उन में भाँति भाँति का अन्न रखा जाए, और हमारी भेड़–बकरियाँ हमारे मैदानों में हज़ारों हज़ार बच्चे जनें;'' हमारा प्रभु परमेश्वर अपनी प्रजा को बहुतायत से आशीष देंगे, और किसी वस्तु की घटी न होगी, जैसे हमारे जीवित परमेश्वर हमारे भण्डार में भर देते है। हमारा प्यारा और दयालु परमेश्वर हमें दुखों और हमारे पापों से छुड़ाएंगे। वह टूटे मनवालों को चंगा करेंगे, और लोगों को अन्धकार से उजियाले की ओर ले जायेंगे। प्रभु अलग–अलग लोगों को अलग–अलग आशीष देते हैं और वह धर्मियों को आशीष देंगे और उनके गोदामों और घरों को भी भर देंगे।

भजन संहिता 23:5 ''तू मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिये मेज़ बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है।'' हमें पता होना चाहिए कि जीवन में, प्रभु हमें कभी भी कुछ भी माप के नहीं देते है। उनकी कृपा सदैव उमड़ती रहती है। हालांकि इन भरपूर आशीषों को प्राप्त करने के लिए एक सरल नुसख़ा है। लूका 6:38 ''दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।'' परमेश्वर हमारी आशीषों को दबा–दबा के देते हैं, हिला–हिलाकर और उमड़–उमड़कर देते है, लेकिन पहले हमें देना सीखना होगा।

उत्पत्ति 12:2 ''और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा।'' प्रभु हमें दूसरों के लिए आशीष बनने के लिए आशीष देंगे। इस आशीष को पाने के लिए प्रभु का हाथ, उनकी कृपा, प्रेम, दया, दयालुता और करुणा हमेशा हम पर बनी रहनी चाहिए।

हम फिर से मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

1 इतिहास 29:12 ''धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।'' सभी धन और सम्मान हमारे प्रभु से आते हैं, हमारा प्रभु पराक्रमी और शक्तिशाली है। वर्षों पहले, जब मैं अमेरिका में गई थी, मेरी यात्रा एक अद्भुत यात्रा थी। अमेरिका एक शक्तिशाली और महत्वपूर्ण देश है, इसलिए इस देश का दौरा करने से मुझे बहुत खुशी और संतुष्टि का अनुभव हुआ। जब कोई अमेरिका के बारे में सुनता है, तो एक ही समय में इस देश का सम्मान करता है और डरता है। तो, एक दिन मैंने उस बहन से पूछा जिसने हमें प्रायोजित किया था, *"हर कोई इस देश का इतना सम्मान और भय क्यों करता है? अमेरिकी डॉलर भी दुनिया की सबसे मूल्यवान मुद्रा है। यह इतना शक्तिशाली राष्ट्र क्यों है?"* बहन ने उत्तर दिया, "हमारा विश्वास परमेश्वर में है, और यहां तक कि हम जो मुद्रा नोट छापते हैं, उस पर *'प्रभु में हमें भरोसा है,'* छपा हुआ है; इसलिए अमेरिका आज भी एक शक्तिशाली, पराक्रमी, बुद्धिमान और समृद्ध देश है। इन सबसे ऊपर, अमेरिका एक ऐसा देश है जो दुनिया के अन्य देशों के लिए प्यार और कृपा दिखाता है।" यह मेरे लिए बहुत अच्छी सीख थी। हमें अपने जीवन में भी केवल प्रभु पर ही विश्वास रखना चाहिए। कई बार मनुष्य के रूप में हमारे विचार भटकते हैं और हमारा विश्वास भी इस पृथ्वी के लोगों के बीच भटकता है। हमारे जीवन में, चाहे कुछ भी हो जाए, हमें कहना चाहिए, 'प्रभु में हम भरोसा करते हैं।' क्या अमेरिका को कोई समस्या, दर्द और दुख नहीं है? हाँ, हैं, लेकिन वे हमेशा अपनी जीत केवल परमेश्वर से प्राप्त करते हैं, क्योंकि वे विश्वास करते हैं कि *'प्रभु में हम भरोसा करते हैं।'*

यीशु कहते हैं कि हमें पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करनी चाहिए, फिर सब कुछ हमें मिल जाएगा। मत्ती 6:33 ''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'' वचन यह नहीं कहता है कि हमें केवल एक या दो चीजें दी जाएंगी, बल्कि, ये सभी चीजें हमें दी जाएंगी (अर्थात बुद्धि, ज्ञान, शक्ति, पराक्रम, अनुग्रह) यदि हम पहले परमेश्वर के राज्य की तलाश करते हैं तब हमारे जीवन यह सब दिया जाएगा।

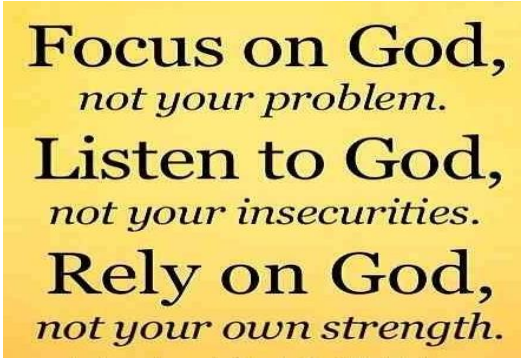

धन और सम्मान प्रभु के हैं, और वह सभी को शक्ति, पराक्रम और बल देते है। पुरुष सोच सकते हैं कि कुछ चीजें कभी नहीं हो सकतीं, लेकिन जब हमारा विश्वास प्रभु में होता है, तो वह हमारे जीवन में सभी चीजों में अद्भुत काम कर सकते है। प्रभु के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। परमेश्वर हमारे जीवन में सब कुछ ठीक करते है। हमेशा प्रभु पर केंद्रित रहें न कि इस संसार की चीजों पर, या किसी मनुष्य पर। हमारे विचार, प्रेम और इच्छा केवल 'प्रभु में भरोसे के साथ' होनी चाहिए।

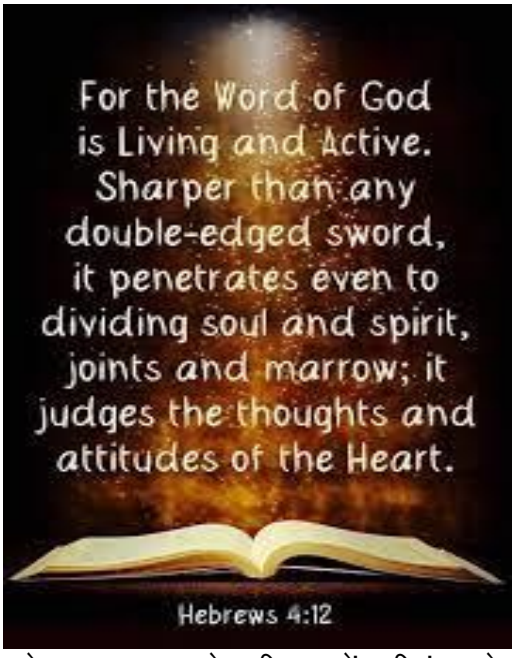

2 कुरिन्थियों 8:9 ''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।'' हमारे लिए, हमारे परमेश्वर दरिद्र हो गए, और अपनी दरिद्रता के द्वारा, उन्होंने हमें पराक्रमी और धनी बनाया; इसलिए हम धन्य हैं। यीशु हमारे लिए जिए, हमारे लिए दुख उठाया, और कलवारी के क्रूस पर हमारे लिए मरे। उन्होंने हमें एक समृद्ध और भरपूर जीवन दिया और हमारी सारी गरीबी को दूर कर दिया। हमें अपने परमेश्वर के साथ जुड़ना चाहिए और उनके साथ एक सहमति करना चाहिए। उनकी कृपा, दया, दयालुता और समृद्धि से ही हम धन्य होंगे।

यदि हम हर एक वचन के साथ परमेश्वर से प्रेम करते हैं जो हम सुनते हैं और हर गीत के साथ हम उसे गाते हैं, तो परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम बढ़ता रहेगा। जब सच्चाई हमारे दिलों में होती है, तो 'वचन' हमारे जीवन में जीवंत हो उठता है। तब हमारा जीवन फलदायी हो जाता है और हम सभी प्रकार के पापों से अलग हो जाते हैं। हर अधिकार प्रभु के हाथ में है। हम अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति को कैसे महसूस कर सकते हैं? वचन के द्वारा! परमेश्वर के वचन के द्वारा, इस दुनिया की रचना की गई थी, और इसी तरह इस दुनिया में सभी चीजें थीं। 'वचन' हमें हमारे जीवन में सुधार, काउंसलिंग, प्रेम और स्नेह देता है। परमेश्वर का वचन कभी नहीं बदलता, लेकिन परमेश्वर का वचन हमें बदल देता है। जब तक हम उस वचन को खुद के लिए स्वीकार नहीं कर लेते और बदल नहीं लेते, तब तक वचन हमसे हर समय बात करता रहेगा। परमेश्वर ने हमें उनके साथ प्रेम, बुद्धि, ज्ञान, विजय और शक्ति में बढ़ने के लिए वचन दिया है। जब हम वचन सुनते हैं और हम बदलते हैं, तो यह हमारे व्यवहार और कार्यों में दिखाई देता है। प्रभु कहते हैं, *'मैं पछतावे के दिलों के करीब हूं, लेकिन अभिमानियों का विरोध करता हूं।'* प्रभु हमेशा हमारे आंसू पोंछने, हमारे दर्द और दुख को दूर करने और हमारी प्रार्थनाओं को सुनने और उनका जवाब देने के लिए हैं। परन्तु परमेश्वर दुष्टों और घमण्डियों से बहुत दूर है। हमारे जीवन में, हमें यह जानना चाहिए कि जब हम प्रभु में बने रहते हैं तो परमेश्वर हमारे जीवन में क्रियाशील होते है क्योंकि हम *'परमेश्वर में अपना भरोसा करते हैं'*। वह हमें हमारी गलतियों, हमारे पापों और हमारे अधर्मों की याद दिलाते है। जब हमारे दिल इसे स्वीकार करते हैं और हम टूट जाते हैं और क्षमा मांगते हैं, तो हम धन्य होते हैं।

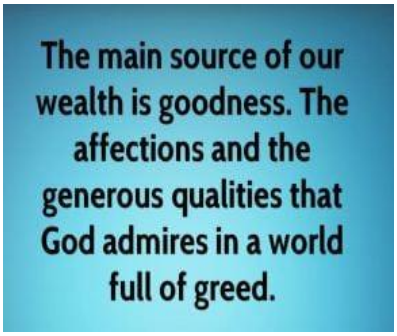

एक दिन, हमारे शारीरिक शरीर हमें विफल कर देंगे, और हम उठने, खड़े होने या चलने, या कुछ भी करने में असमर्थ होंगे। उस समय, हमें उस अवस्था में मदद करने के लिए केवल प्रभु की कृपा की आवश्यकता होगी। परन्तु क्या वह वहाँ होंगे यदि हम उन्हें पुकारें? शायद नहीं, अगर हमने

उन्हें अपने से बहुत दूर रखा है। प्रभु के साथ संबंध बनाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि रात भर या एक सप्ताह या एक महीने में कुछ नहीं होता है। हर दिन हमें *'प्रभु में हम भरोसा करते हैं'* ऐसा होना चाहिए, फिर, अगर एक दरवाजा बंद होता है, तो प्रभु हमारे लिए दस और दरवाजे खोल देते है। अगर दुश्मन एक दरवाजे से प्रवेश करता है, तो उसे दस अलग–अलग दरवाजों से भागना होगा। ऐसा है हमारा पराक्रमी परमेश्वर! हम *'देने वाले'* बनेंगे, *'लेनेवाले'* नहीं। हम पर बहुतायत से धन की वर्षा होगी। हमें परमेश्वर के वचन को कहानी या इतिहास के रूप में नहीं सुनना चाहिए, बल्कि हमें परमेश्वर के वचन को ध्यान से सुनना चाहिए। यह हमें जीवन देता है, और वचन को हमारे जीवन में कार्य करना चाहिए। जैसा कि परमेश्वर कहते है, *'धन और सम्मान दोनों मेरे हैं; शक्ति और पराक्रम मेरे हैं। मैं तुम्हें शक्ति दूंगा।'*

हम लंगड़े, बहरे या गूंगे प्रभु की आराधना नहीं करते हैं – हम एक 'जीवित परमेश्वर' की आराधना करते हैं जो हमारे दर्द और दुख को देख, महसूस और अनुभव कर सकते हैं। हमारे पूछने से पहले वह हमारी जरूरतों को जानते है। हमारा परमेश्वर एक जीवित परमेश्वर है। लेकिन, हमारी प्रार्थनाएँ उसके द्वारा कई बार क्यों नहीं सुनी जाती हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमें दूर से देख रहे है, और हमने उन्हें अभी तक अपने हृदय में प्रवेश नहीं करने दिया है। हम कठोर–दिल, पत्थर–दिल हैं, और हमने उन पर सन्देह किया है। लेकिन, जब हम सच्चे परमेश्वर का अनुभव करते हैं, तो वह हमारे दिलों को तोड़ देंगे और प्रवेश करेंगे। ऐसे समय तक, प्रभु एक अच्छा परमेश्वर है; वह हमारे दिलों के बाहर खड़े होंगे और तब तक दस्तक देते रहेंगे जब तक हम अपना दिल नहीं खोल देते। अंदर से कुंडी हमारे हाथ में है, इसलिए हमें भीतर से दरवाजा खोलने की जरूरत है। तब तक वह दस्तक देते रहेंगे। 1 इतिहास 29:12 '' धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।'' हमें केवल अपने स्वार्थ के लिए प्रभु से प्रेम नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें अपनी मृत्यु तक उससे प्रेम करना चाहिए। हमारा विश्वास अंत तक उन पर बना रहना चाहिए। बहुत से लोग यीशु के पीछे जहाँ कहीं भी गए, कुछ उनके कार्यों की परीक्षा लेने के लिए, कुछ खाने के लिए, कुछ वचन सुनने के लिए, कुछ चमत्कार देखने के लिए, और कुछ उनमें दोष खोजने के लिए थे। हमें यह जानने की जरूरत है कि आज हम इनमें से किस समूह से संबंधित हैं। जब हम पछताए हुए मन से परमेश्वर के सामने आते हैं, तो वह हमें क्षमा करने और हमें एक बार फिर से उठाने के लिए तैयार होते है।

> You can have harmony with God and conflict with people, or you can have harmony with people and find yourself in conflict with the living God who loves you.

हन्ना की कहानी हम सभी जानते हैं। बांज होने के कारण वह एक दुखी महिला थी। हर साल वह यरूशलेम में परमेश्वर के पवित्र मंदिर में जाती थी, जैसा कि सभी इस्राएलियों ने किया था। हालाँकि मंदिर दूर था, साल में एक बार, दूर–दूर से लोग उनके पवित्र मंदिर में प्रभु की आराधना करने के लिए यरूशलेम आते थे। जैसे प्रभु ने हमें यहां एक पवित्र मंदिर दिया है, हमारे लोग भी इस पवित्र मंदिर में सप्ताह में दो बार दूर–दूर से आते हैं। इस्राएली वर्ष में केवल एक बार ही मिल पाते थे।

हम वास्तव में भाग्यशाली हैं कि हम अपने मंदिर में सप्ताह में दो बार एकत्र होते हैं और प्रभु का आशीष प्राप्त करते हैं। हम सभी जानते हैं कि सब्त का दिन विश्राम का दिन है जब हमें कोई कार्य नहीं करना चाहिए। पूरा दिन प्रभु परमेश्वर को समर्पित है। इस्राएल में, वे केवल परमेश्वर की उपासना करते हैं और सब्त के दिन कोई काम नहीं करते हैं। लेकिन हमारे लिए शनिवार और रविवार दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। पुराने दिनों में, लोग यरूशलेम के मंदिर में जाते थे, और हन्ना भी ऐसा ही करती थी। एक साल, हन्ना की प्रार्थना सुनी गई और प्रभु ने उसे एक बच्चे के साथ उपहार में दिया। हन्ना कहती है, 1 शमूएल 2:7 में ''यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है।''

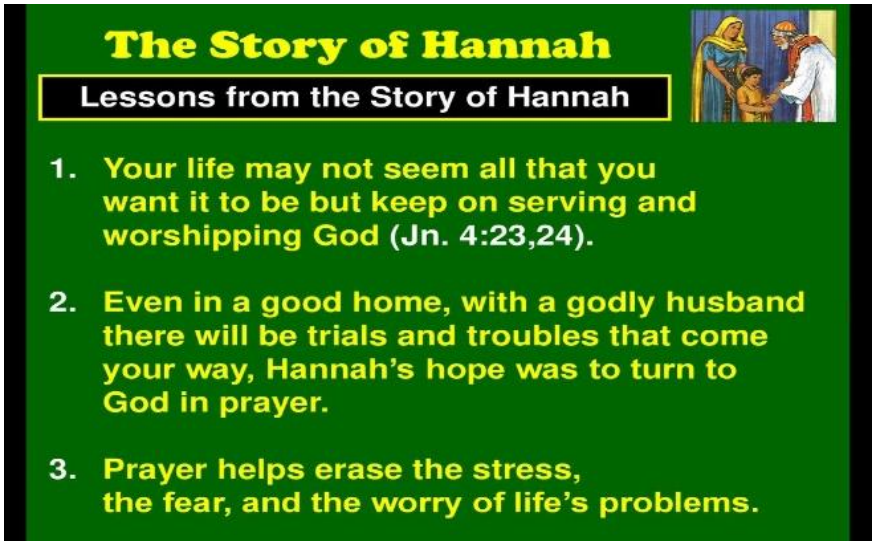

हाँ, यहोवा हमें दरिद्र भी बनाते है और धनी भी बनाते है, वह उठाते भी है और नीचे गिराते भी है। क्या हमें ऐसे शक्तिशाली प्रभु की आराधना नहीं करनी चाहिए? प्रभु हमारे कार्यों और हमारे स्वभाव को देखते है। वह हमारे हर विचार को जानते है। जब हम खुश होते हैं, तो हम हंसमुख और उज्ज्वल होते हैं। जब हम उदास होते हैं तो यह हमारे चेहरे पर आसानी से दिखाई देता है। परन्तु हमारा परमेश्वर हम पर अपना क्रोध कभी नहीं दिखाते। वह एक शक्तिशाली परमेश्वर है, और वह कभी क्रोध नहीं दिखाते है। फिर भी, हम अतिदुखी प्राणी हैं, क्योंकि हम खुलकर अपनी नापसंदगी दिखाते हैं। अगर प्रभु हमें पसंद करते हैं, तो वह हमें और भी ऊंचा उठाएंगे। लेकिन, अगर वह हमें पसंद नहीं करते है, तो वह हमें और दंड देंगे। वह हमारे पराक्रमी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं। उनके कार्यों को कौन नियंत्रित कर सकता है? क्या प्रभु के लिए कुछ भी कठिन है? नहीं, प्रभु के लिए कुछ भी कठिन नहीं है! हमें इस सत्य को जानना चाहिए, और यही सत्य हमें स्वतंत्र करेगा। परमेश्वर के समय के बिना, हम कुछ नहीं कर सकते। हन्ना के दर्द की कल्पना कीजिए, जब उसने 1 शमूएल 2:7 में कहा था, ''यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है।'' हमें भी इस सच्चाई को जानना चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि प्रभु के पास सब धन और सम्मान हैं और केवल वही हमें आशीर्वाद दे सकते हैं।

प्रभु हमें अलग–अलग तरीकों से अमीर बनाते हैं। इफिसियों 1:7 ''हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है,'' प्रभु कृपा के धनी हैं। हम पापी हैं, और हमारे सभी कर्म पापी हैं, लेकिन प्रभु की अपार कृपा हम पर है। उन्होंने हमें बड़े और पराक्रमी पापों से बचाया है। हमारे प्रभु ने अपनी कृपा से हमें धनवान बनाया है और प्रभु की कृपा से ही हम जीवन में धनवान बनते हैं।

इफिसियों 2:4–5 ''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),'' परमेश्वर दया का धनी है, और उसने हम से प्रेम किया है और हमें अपनी दया दी है।

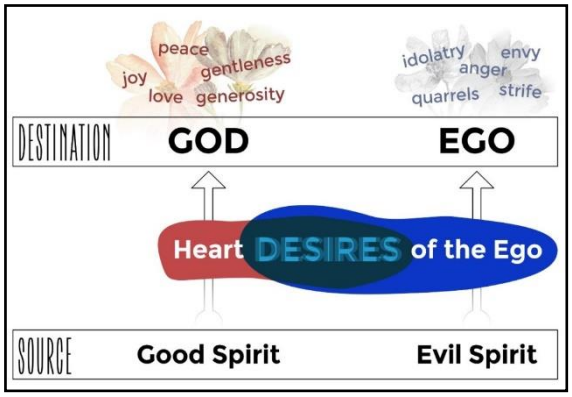

आत्माएं दो प्रकार की होती हैं: 1) अच्छी और 2) बुरी। हम जानते हैं कि हनोक नहीं मरा, क्योंकि वह जीवित उठा लिया गया था। क्या उसकी आत्मा हम से बात नहीं करेगी? हाँ, यह एक अच्छी आत्मा है, और यह हमें सही मार्ग सिखाएगी। लेकिन हम हमेशा आसान रास्ता चुनते हैं (अर्थात गलत रास्ता)। हनोक 365 वर्षों तक परमेश्वर के साथ चला। उसका अपना परिवार था, फिर भी, वह दृढ़ता से परमेश्वर के साथ चला, और इसलिए, उसे जीवित उठा लिया गया। कल्पना कीजिए कि हमारे साथ क्या होगा जब यीशु अंत समय के दौरान हमें लेने आएंगे। हनोक की तरह, हमें दुनिया और उसके लोगों को खुश नहीं करना चाहिए। जब हम परमेश्वर का भय नहीं मानते, तो हम झूठे और चोर हैं, और हम यीशु को बार–बार अपने पापों के साथ क्रूस पर चढ़ाते हैं। फिर प्रभु हमें कैसे बचा सकते हैं? वह हमें कैसे उठा सकते है? जब हम उसे पुकारते हैं तो वह हमारे बचाव में कैसे आ सकते है? परमेश्वर हमें त्याग सकते है और हमें और गहरे संकट में डाल सकते है। निश्चय ही, परमेश्वर हमें तब त्याग सकते है जब हम उनका इन्कार करते रहें और अपने पापों में लगे रहें।

लूसिफर को स्वर्ग के राज्य से इस पृथ्वी पर निकाल दिया गया था जब उसने परमेश्वर की तरह व्यवहार करने की कोशिश की थी। उसके साथ, एक तिहाई दूत भी इस दुनिया में डाले गए। केवल परमेश्वर ही हमें सिंह के मुंह और आग की भट्टी से बचा सकते है। पवित्र शास्त्र में लिखा है कि जल की धाराएं न तो हमें डुबा सकती हैं और न ही अग्नि हमें बुझा सकती हैं। यह वादा, प्रभु ने उन्हें दिया है जो उस पर विश्वास करते हैं, और इस दुनिया में हर किसी को नहीं। यदि हम परमेश्वर से प्रेम करना शुरू कर दें और अपने जीवन में सब कुछ त्याग दें, तो वह हमें आशीष देंगे। याद रखें, यदि शत्रु ने यीशु को नहीं बख्शा, तो क्या वह आपको और मुझे छोड़ देगा? इसलिए, हमें प्रभु की शक्ति में विश्वास करना चाहिए जो हमें ऊपर उठा सकता है और नीचे भी ला सकता है। लेकिन अगर हम लगातार परमेश्वर को अस्वीकार करते रहें और पाप में अपना जीवन जारी रखें, तो परमेश्वर निश्चित रूप से हमें नीचे गिरा देंगे। प्रभु कहते हैं, *'यदि एक आंख पाप करती है, तो उस आंख को निकाल दो, क्योंकि केवल एक आंख से प्रभु के राज्य में प्रवेश करना बेहतर है।'* आज तक, हमारे प्रभु ने हमें हमारे पापों के अनुसार दंडित नहीं किया है। हमारा परमेश्वर दयालु, धनी और प्रचुर मात्रा में हम पर दया करने वाला परमेश्वर है।

जब यहूदा ने यीशु को तीस सिक्कों के लिए धोखा दिया, तो अपराध ने उसे नष्ट कर दिया, और वह धन वापस करने के लिए राजा हेरोदेस के पास दौड़ा। अंत में उसने चांदी के तीस सिक्के मंदिर में फेंक दिए

> When you learn how to sit at the table with your Judas, you'll understand the love of Christ.

और फिर आत्महत्या कर ली। उसकी मृत्यु भयानक थी। यहूदा यीशु के सामने जाने से डरता था, और जब उसने महसूस किया कि यहूदियों ने उसे तीस सिक्कों के लिए धोखा दिया है, तो उसने आत्महत्या कर ली। हमारा जीवन यहूदा जैसा नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें पतरस की तरह होना चाहिए, और एक पश्चातापपूर्ण जीवन जीना चाहिए। जब मुर्गे ने तीन बार बाँग दी, तो पतरस को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह दुखी हुआ और पश्चातापी हुए मन से पछताया। यीशु ने पतरस के पश्चातापी हृदय को देखा और उसे अधोलोक और स्वर्ग की कुंजियाँ दीं। लेकिन यहूदा को क्या हुआ? उसने आत्महत्या कर ली और नरक चला गया। हमारा जीवन पतरस के समान होना चाहिए, और हमें पश्चाताप करना चाहिए। हम अपने व्यवहार से यीशु मसीह के द्वारा अमीर या गरीब बन सकते हैं। हन्ना ने यह जान लिया और कहा, 1 शमूएल 2:7 ''यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है।''

1 तीमुथियुस 6:18 ''वे भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों,'' प्रभु हमें अच्छे कार्यों से समृद्ध बनाते है। परमेश्वर के भले काम ऐसे थे कि उन्होंने टूटे मनवालों को चंगा किया और बंदियों को छुड़ाया, लंगड़ों को फिर से चलाया, और अंधों को दिखाया। यीशु ने हमेशा अच्छा करने का प्रयास किया।

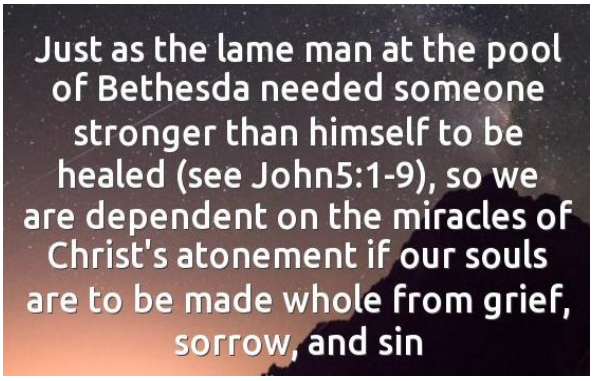

हम जानते हैं कि एक बीमार आदमी था जो 38 साल तक बैतहसदा कुण्ड के किनारे पड़ा रहा। उस पर किसी ने दया नहीं की, केवल यीशु ने ही उस पर दया की थी। साथ ही, हम उस व्यक्ति की कहानी भी जानते हैं जिसमें दुष्टआत्माओं की एक सेना थी, जो कब्रिस्तान में बैठता था और खुद को घाव पहुँचता था। उसके लिए कोई नहीं था, लेकिन यीशु ने उस पर अनुग्रह दिखाया और उसे छुड़ाया। पूरा गाँव यीशु के खिलाफ होने के बावजूद, वह फिर भी आगे बढ़े और दुष्ट आत्माओं की एक सेना से पीड़ित इस आदमी को चंगा किया। पिता परमेश्वर ने यीशु को ऐसे अद्भुत स्वभाव से आशीषित किया है, कि वह केवल इस पृथ्वी पर अपने अच्छे कार्य करें। हमारे जीवन में भी, परमेश्वर हमें अपने अनुग्रह, दया और अच्छे कार्यों के धन से आशीषित करना चाहते है। यीशु को हमारे लिए इस दुनिया में भेजा गया था, ताकि हमारे लिए जिए, हमारे लिए मरे, और तीसरे दिन हमारे लिए जी उठे।

इत्र की शीशी जब अलमारी में रखी होती है तो सुगंध नहीं निकलती। लेकिन, जब चारों ओर छिड़काव किया जाता है, तो यह अपना सुगंध छोड़ देती है। इसी तरह, जब यीशु ने क्रूस पर अपना जीवन दिया और हमारे लिए अपना शरीर तोड़ा, तो उनकी सुगंध ने इस पृथ्वी को भर दिया। उनका अनुग्रह और दया मानव जाति पर बहुतायत में थी, और इस प्रकार, उन्होंने हमें एक अद्भुत जीवन दिया।

नीतिवचन 22:1 ''बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चाँदी से दूसरों की प्रसन्नता उत्तम है।'' परमेश्वर हमें महान धन पर एक अच्छा नाम देते है। तबीता (जिसे दोरकास भी कहा जाता है) अच्छे कामों और धर्मार्थ कार्यों से भरी महिला थी। जिनके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं थे वह उन लोगों के लिए शॉल बुनती थी और कपड़े सिलती थी। उसने फटे कपड़े भी सिलवाए और उन्हें ठीक किया। तबीता ने कई लोगों के लिए अच्छे काम किए। एक दिन वह बीमार पड़ी और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। लोगों ने सुना था कि पतरस पड़ोस के गाँव में जा रहा है, और उन्होंने उसे तबीता की मृत्यु का सन्देश भेजा। जब वह इस स्थान पर पहुंचा, तो लोगों ने उसे उन सभी भले कामों के बारे में बताया जो तबीता ने उनके लिए किए थे। पतरस ने तबीता के घर में प्रवेश किया और उसके लिए प्रार्थना की, और वह तुरन्त जीवित हो गई। यह तबीता के अच्छे कामों ने उसे एक बार फिर से अपना जीवन वापस दे दिया ताकि वह इस दुनिया में अपने अच्छे कामों को जारी रख सके। इस उदाहरण से, हम समझते हैं कि यह हमारी शिक्षा, ज्ञान या धन नहीं है, बल्कि केवल हमारे अच्छे कार्य हैं जो हमें प्रभु के साथ एक कर सकते हैं। यह प्रभु है जो हमारे अच्छे कार्यों को देखते है और हमें आशीर्वाद देते है। अच्छे काम सोने–चाँदी से बढ़कर हैं, वे अनमोल हैं। नीतिवचन 29:1 ''जो बार बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।'' सुलैमान ने परमेश्वर से बुद्धि मांगी, परन्तु परमेश्वर ने उसे न केवल बुद्धि से, वरन इस जगत की दौलत से भी आशीषित किया। परमेश्वर हमें उससे अधिक आशीष क्यों नहीं देंगे जो हम उनसे माँगते हैं, या वह जो हम कभी सोच सकते हैं? जब हम प्रभु परमेश्वर के लिए अच्छे कार्य करते हैं, तो वह हमें जितना हम सोच सकते हैं उससे कहीं अधिक आशीष देंगे। तबीता के अच्छे कार्यों ने उसे पतरस के माध्यम से एक नया जीवन दिया।

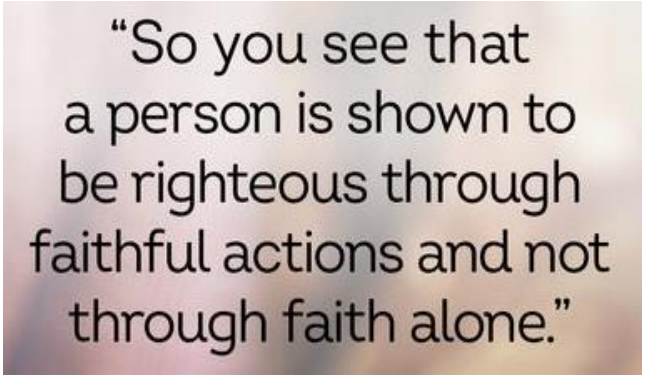

याकूब 2:5 ''हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उस ने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?''

प्रभु ने इस दुनिया के गरीबों को, जो विश्वास के धनी हैं, अपने राज्य के वारिस के रूप में चुना है। पवित्र शास्त्र में, हम बहुत से ऐसे लोगों के बारे में जानते हैं जो विश्वास के धनी थे (अब्राहम, याकूब, इसहाक, दानिय्येल, दाऊद, एलिय्याह, एलीशा, आदि) जो विश्वास के धनी थे, वे वादे किए हुए थे, और वादे की हुई भूमि उन्हें दी गई थी। हमें वचन को याद रखना चाहिए, क्योंकि यह हमें इस दुनिया के सभी फन्दों से बचाएगा।

हमारे प्रभु ने हमें विश्वास का धनी बनाया है। इफिसियों 1:18 ''और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है,'' परमेश्वर महिमा के धनी हैं। हमारे अनुग्रहकारी परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को बुलाया है, और हम जानते हैं कि हमारी बुलाहट की आशा और महिमा का धन हमारे लिए उनका भाग है। जो उनके समान महिमामय जीवन जीते हैं, वे उसके द्वारा छीन लिए जाएंगे। जो उनका भय मानते हैं, जो उनकी महिमा के धन में रहते हैं, और जो उनके अनुग्रह में रहते हैं, वे सभी उनके स्वर्गदूतों द्वारा एकत्र किए जाएंगे, और परमेश्वर हमें अपने साथ ले जाएंगे। प्रभु हमें उठा सकते हैं और वह हमें नीचे गिरा सकते हैं, इसलिए हमारा जीवन हमेशा *'प्रभु में हम भरोसा करते हैं'* होना चाहिए। लोग सोचते हैं कि एक क्रिस्ती जीवन जीना आसान है। यह बहुत कठिन है जब तक कि हम प्रभु की पहली आज्ञा का पालन नहीं करते हैं। *'अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम करो।'* जब तक हम अपने दिल की गेहरायों से प्रभु से सच्चा प्यार नहीं करते, हम वास्तव में एक धर्मी जीवन नहीं जी सकते। मत्ती 6:33 ''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'' हाँ, सब चीज़ें हमारे साथ जोड़ी जाएँगी। परमेश्वर हमें कौवे के द्वारा खिलाएंगे, जैसे उन्होंने एलिय्याह को खिलाया। वह एलिय्याह का विश्वास था। परमेश्वर ने योना को सबक सिखाने के लिए एक मछली तैयार की, इसलिए जब परमेश्वर ने मछली को योना को निगलने की आज्ञा दी, और बाद में जब परमेश्वर ने मछली को योना को उल्टी करने की आज्ञा दी, तो मछली ने वैसा ही किया। प्रभु सब कुछ और कुछ भी कर सकते हैं, वे इस विश्व के निर्माता हैं।

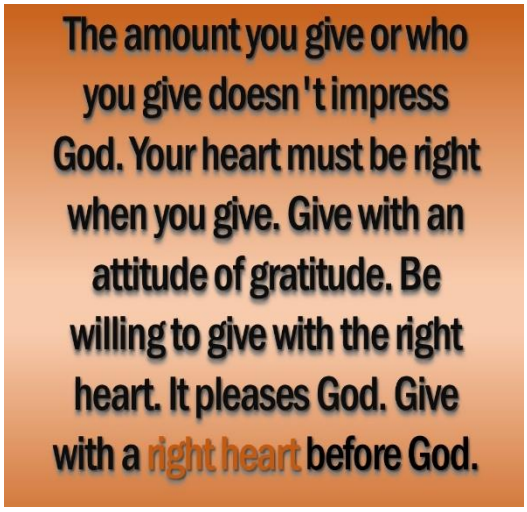

प्रभु धन और बुद्धि दोनों देते है। हम एक प्रश्न पूछ सकते हैं – क्या प्रभु की कृपा इस दुनिया में रहने के लिए पर्याप्त है, या क्या हमें भी इस दुनिया के धन की आवश्यकता है? याद रखें, प्रभु की कृपा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते, लेकिन उनकी कृपा से ही हम सभी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। 2 इतिहास 1:8–12 ''सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, "तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा और मुझ को उसके स्थान पर राजा बनाया है। अब हे यहोवा परमेश्वर! जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था, वह पूरा हो; तू ने तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा बनाया है जो भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत है। अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे कि मैं इस प्रजा के सामने अन्दर–बाहर आना–जाना कर सकूँ, क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?" परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, "तेरी जो ऐसी ही इच्छा हुई, अर्थात् तू ने न तो धन सम्पत्ति माँगी है, न ऐश्वर्य और न अपने बैरियों का प्राण और न अपनी दीर्घायु माँगी, केवल बुद्धि और ज्ञान का वर माँगा है, जिस से तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैं ने तुझे राजा नियुक्त किया है, न्याय कर सके, इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता है। मैं तुझे इतनी धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य भी दूँगा, जितना न तो तुझ से पहले किसी राजा को मिला और न तेरे बाद किसी राजा को मिलेगा।'' सुलैमान ने परमेश्वर से इस्राएल पर शासन करने के लिए बुद्धि, समझ, अनुग्रह, विश्वास और दया का धन मांगा। प्रभु ने उसे इन सभी के साथ आशीष दिया, और इस दुनिया की संपत्ति भी दिया। यदि हम परमेश्वर की महिमा, अनुग्रह, दया, ज्ञान और विश्वास के धन को प्राप्त करते हैं, तो परमेश्वर हमें इन सभी आत्मारिक धन के साथ–साथ सांसारिक धन भी प्रदान करेंगे।

Don't fall in love with the blessings. Fall in love with the Blessor. Seek first the Kingdom & God will reward you!

सुलैमान एक बुद्धिमान व्यक्ति था। 2 इतिहास 9:22 ''यों राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया।'' सुलैमान इस संसार के सभी राजाओं में सबसे धनी था। हम और क्या चाहते हैं? प्रभु न केवल वह सब कुछ देते है जो हम मांगते हैं, बल्कि वह भी देते हैं जो हम चाहते हैं और जिसके हम लायक हैं। प्रभु दे सकते है, और वह ले भी सकते है, जो कुछ भी है वह जब चाहे ले सकते है। जब हम परमेश्वर के राज्य की खोज करते हैं, तो परमेश्वर स्वतः ही हमारे जीवन में सभी अच्छी चीजों को जोड़ देंगे।

इस्राएलियों को कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ा, जबकि वादे की गई भूमि के निवासियों ने कड़ी मेहनत की। यहोवा ने इन निवासियों को दूर भगाया, और इस उपजाऊ और फलदायक भूमि को इस्राएलियों को दे दिया। यहोवा हमें बताते है कि इस पृथ्वी पर अपना धन जमा न करें, क्योंकि जहां हमारा पैसा है वहां हमारा दिल होगा। हम जानते हैं कि कैसे लूत की पत्नी उस भौतिक संपत्ति को देखने के लिए पीछे मुड़ी जिसे उसने पीछे छोड़ दिया था, और वह नमक के खम्भे में बदल गई। प्रभु हमें कहते हैं, *'खाओ, पियो और खुशियां मनाओ, इस दुनिया में किसी भी चीज की चिंता मत करो। आप जो कुछ भी मांगेंगे, वह आपको मिलेगा। इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'* इस संसार में हमें किसी बात की घटी न होगी। प्रभु हम में से किसी को भी गरीब नहीं रहने देंगे। इसके बजाय, वह चाहते है कि हम सभी उनकी महिमा और धन में समृद्ध हों। हम नीकुदेमुस की कहानी जानते हैं, जो यीशु से मिला और उनसे पूछा कि वह परमेश्वर के राज्य को कैसे प्राप्त कर सकता है। यीशु ने उससे कहा कि उसे फिर से जन्म लेना है, जिस पर नीकुदेमुस ने यीशु से पूछा कि वह फिर से कैसे जन्म ले सकता है। नया जन्म लेने का अर्थ है, हमें यीशु मसीह के लहू से खरीदे और धोए जाने की आवश्यकता है। नया जन्म लेने के बाद, हमें प्रार्थना में परमेश्वर से क्षमा माँगने की आवश्यकता है; हमें परमेश्वर को यह बताने की आवश्यकता है कि हमने अपनी पुरानी आदतों और पुराने परिचितों को त्याग दिया है, और हम बुरे लोगों के साथ संगति नहीं करेंगे। हमें उनसे प्रार्थना करनी चाहिए और उनसे अपने हृदय की इच्छा पूरी करने के लिए कहना चाहिए। हमारे प्रभु ने कहा है, *'मांगो और तुम को मिल जाएगा, ढूंढो और तुम पाओगे।'* हमारे प्रभु झूठ नहीं बोलते, वह हमेशा हमारी प्रार्थना सुनेंगे और हमें उत्तर देंगे।

Let us more and more insist on raising funds of love, of kindness, of understanding, of peace. Money will come if we seek first the Kingdom of God - the rest will be given.

हम देने से प्रभु का धन प्राप्त कर सकते हैं। मलाकी 3:10 ''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।'' एक बार जब

हम फिर से जन्म लेते हैं और जब हम प्रभु से मांगते हैं, तो वह हमें हमारी प्रार्थनाओ का जवाब देंगे। अब, हम उनके धन को 'देने' के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु कहते हैं, *'परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है।'* जब वह देते है, तो वह हिला–हिलाकर, दबा–दबाकर, और उमड़–उमड़कर देंगे, और किसी चीज की कमी नहीं होगी। परमेश्वर के प्रेम में उलझे रहने के लिए, हमें फिर से जन्म लेना होगा; और जब हम नया जन्म लेंगे, तब हम परमेश्वर से मांग सकते हैं और जो हम चाहते हैं वह हमें वह देंगे। हमारे पापों को छोड़ देना चाहिए, तभी हम उनसे माँग सकते हैं और वह हमें हमारे दिल की इच्छा पूरी करेंगे।

प्रभु कहते हैं कि हमारा देना बहुतायत से होना चाहिए। कुरनेलियुस नाम का एक फरीसी था, जो हमेशा प्रकृति से दान करता रहता था। उसने प्रभु के लिए कई मंदिर बनवाए और प्रभु के सेवकों की मदद की। परमेश्वर ने उससे प्रेम किया और उसकी गवाही दी। याद रखें, प्रभु स्वर्ग की खिड़कियां खोलेंगे और ऐसे लोगों पर अपना आशीष बरसाएंगे। हमें प्रभु की परीक्षा लेने और इसे देखने की जरूरत है। लूका 6:38 ''दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।''

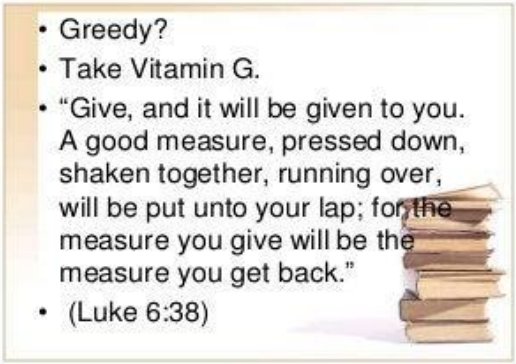

यह कोई उपदेशक नहीं है जो यह कह रहा है, परन्तु यीशु जो कहते हैं, *'दे दो और यह तुम्हें अच्छी मात्रा में दिया जाएगा, हिला–हिलाकर, दबा–दबाकर, और उमड़–उमड़कर।'* हाँ, परमेश्वर एक महान परमेश्वर है और वह एक हर्षित देनेवाले को आशीष देते है। प्रभु हर्षित देने वालों को आशीष देना जारी रखते हैं। यीशु जहाँ भी गए, वहाँ सभी प्रकार के लोग थे जिन्होंने उनकी सेवा की, उनके साथ खाया–पीया, उनकी परीक्षा ली, और आशीष पाने के लिए उनके वचन को सुना। हमने पवित्र शास्त्र में पढ़ा है कि जब मरियम मगदलीनी ने यीशु का अभिषेक करने के लिए जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पाँवों पर डाला, तो लोगों ने बड़बड़ाया और कहा, *'उसने इस बोतल को तोड़कर यीशु के चरणों में क्यों बर्बाद कर दिया, जबकि इसे बेचा जा सकता था और पैसे का इस्तेमाल गरीबों के लिए किया जा सकता था?'* आज भी उसी तरह के लोग मौजूद हैं। जो लोग परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए देते हैं उन्हें बहुतायत से आशीष दी जाएगी। वचन कहता है, *'जिस नाप से तुम दोगे, वही नाप तुम्हारे लिये काम आएगा।'* वचन सदा सत्य है।

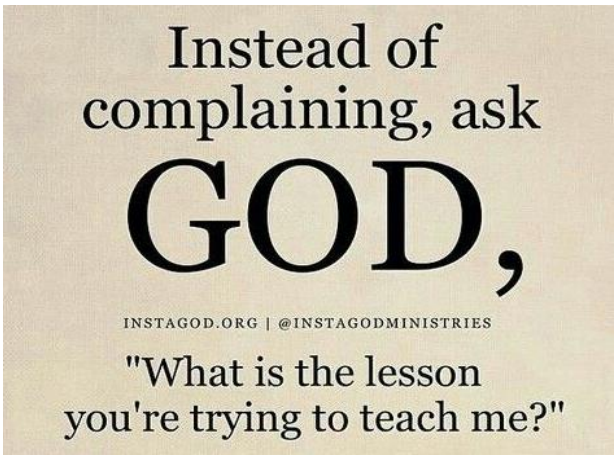

परमेश्वर ने दूत को सदोम और अमोरा के पूरे देश को बचाने के लिए नहीं भेजा; बल्कि, उन्होंने अपने दूत को केवल लूत और उसके परिवार को बचाने के लिए भेजा। स्वर्गदूत आया और लूत और उसके परिवार को घर छोड़ने के लिए मजबूर किया, लेकिन उनका दिल अभी भी भौतिक चीजों पर टिका हुआ था जिसे उन्होंने पीछे छोड़ दिया था। प्रभु हमारी आत्मा को प्यार करते हैं, इसलिए स्वर्गदूत ने परिवार को उनके घर से निकाल दिया और उन्हें ले गए। हम पर परमेश्वर की कृपा और हम पर उनकी छाया को कभी न भूलें, जो हमारी रक्षा करती है।

इसी तरह, स्वर्गदूत यीशु के साथ आएंगे, और जब तुरही फूँकी जाएगी, तो स्वर्गदूत उन्हें लेने के लिए दुनिया के चारों कोनों से परमेश्वर के चुने हुए लोगों को चुन लेगा। अगर आज तक हमने अपने जीवन को प्रभु के हाथों में नहीं दिया है, तो चलिए अब करते हैं। हमारे प्रभु परमेश्वर आधी रात को चोर के रूप में आएंगे और उनके आने का किसी को पता नहीं चलेगा। अंत के समय में, किसी पर या किसी व्यक्ति पर विश्वास न करें। केवल स्वर्ग में हमारा पिता ही उस घड़ी और समय के बारे में जानते है। जब यीशु आएंगे, तो भले और नेक लोग उसे देखेंगे। जिन्होंने उस पर थूका और उसे सूली पर चढ़ाया, वे भी उन्हें देखेंगे। सारी मानवजाति उन्हें उनके दूसरे आगमन में, इस बार, उनकी महिमा में देखेगी। परमेश्वर चाहते है कि हम पश्चाताप करें और बदलें; वह एक प्रभु है जो हमें सुधारेंगे और हमें इस हद तक विनम्र भी करेंगे

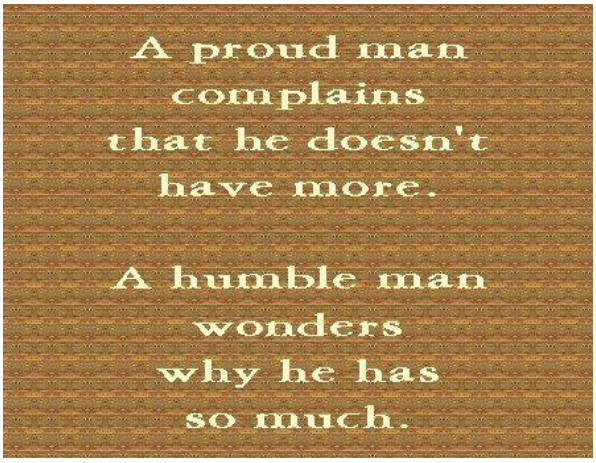

कि हम बदल जाएं। यदि हमें सुधारा नहीं गया, तो हम उनकी प्रतिज्ञा की हुई संतान नहीं बनेंगे, बल्कि हम बेसहारा बच्चे बन जाएँगे। आम तौर पर लोग अपने बच्चों को सुधारते हैं, दूसरों के बच्चों को नहीं। पिता अपने पुत्र को सुधारेगा, क्योंकि अधिकार उसी के पास है। इसी तरह, हमारे पिता परमेश्वर हमें सुधार सकते हैं। आखिरकार, उसने हमें हमारे पापों से छुड़ाने के लिए अपने इकलौते बेटे को भेजा। यूहन्ना 1:16 ''क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।''

हमारे अब्बा पिता की परिपूर्णता के कारण, हमें अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त हुआ है। जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं, तो हमारे जीवन में सब कुछ जुड़ जाएगा।

अमीर बनने के लिए हमें खुद को विनम्र बनाना होगा। 1 पतरस 5:5 ''इसी प्रकार हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।'' प्रभु की कृपा प्राप्त करने के लिए हमें स्वयं को विनम्र बनाना होगा। हमें कभी भी अपने आप पर गर्व नहीं करना चाहिए, या यह नहीं सोचना चाहिए कि हम बुद्धिमान हैं। विशेष रूप से, प्रभु के सेवकों के सामने, हमें खुद को विनम्र करने की जरूरत है। भजन संहिता 5:7 ''परन्तु मैं तो तेरी अपार करुणा के कारण तेरे भवन में आऊँगा, मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूँगा।'' जब हम परमेश्वर के पवित्र मंदिर में एक भीड़ के रूप में एक साथ आएंगे, उनकी दया और अनुग्रह के कारण, हम उनका भय मानेंगे और उनके पवित्र मंदिर में उनकी आराधना और स्तुति गाएंगे। परमेश्वर के मंदिर में, उनके लोग इकट्ठे होते हैं और उनके शिष्य बन जाते हैं। इसके लिए हमारे स्वभाव को बदलना होगा और दुनिया के लोगों से अलग होना होगा। हम जानते हैं कि इस दुनिया के अमीर लोगों के पास सभी महंगी चीजें हैं। घर, कार, आभूषण; और जो कुछ उनके पास है, उसी से हम जानते हैं कि वे धनी हैं। इसी तरह, अपने जीवन के हर तरीके में हमें यह

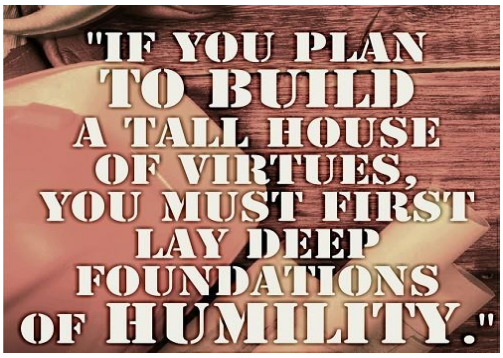

दिखाना चाहिए कि हम परमेश्वर के शिष्य हैं। हमारा काम हमारी हैसियत को दर्शाता है, वैसे ही प्रभु के साथ हमारा रिश्ता उसके साथ हमारे रिश्ते को दर्शाता है। एस्तेर 1:4 ''वह उन्हें बहुत दिन वरन् एक सौ अस्सी दिन तक अपने राजसी वैभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ दिखाता रहा।'' राजा

क्षयर्ष ने छह महीने की अवधि में अपने गौरवशाली राज्य के संपत्ति और धन का प्रदर्शन किया, और लोगों ने देखा कि वह एक धनी राजा था। ये धन अस्थायी हैं, लेकिन जब हमारा परमेश्वर हमें सम्मान और महिमा देते है, तो यह हमेशा और हमेशा के लिए हमारे साथ रहेगा। हमारे प्रभु के धन के आगे राजा का धन कुछ भी नहीं है, और परमेश्वर हमें बहुतायत से आशीष दे सकते है। अपनी बुद्धि से जब हम धन प्राप्त करेंगे तो उसकी एक समय सीमा होगी। लेकिन जब परमेश्वर हमें धन का आशीष देते है, तो यह हमेशा और हमेशा के लिए होता है, और इसकी कोई समय सीमा नहीं होती है। हमें अपने धन और संपत्ति पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह केवल कुछ समय के लिए ही होगा। इसके बजाय, हमें अपने परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो हमें हमेशा और हमेशा के लिए अपनी परिपूर्णता में आशीष देंगे।

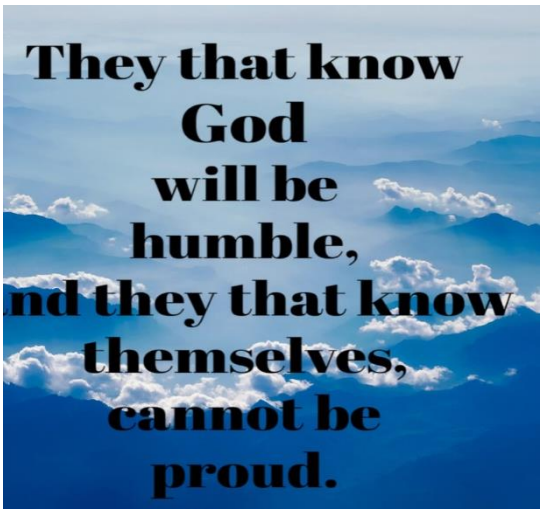

इफिसियों 2:4–5 ''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),'' हमें केवल प्रभु की कृपा और दया से अमीर बनने की इच्छा रखनी चाहिए। परमेश्वर के लोग हमेशा उनकी छाया में रहते हैं, अनुग्रह, दया और विश्वास के साथ। सीरियाई सेना का सेनापति नामान कोढ़ से पीड़ित था, और उसके पास जो भी धन और शक्ति थी, वह उसे इस बीमारी से ठीक नहीं कर सका। उसे उसके स्वामी, अराम के राजा ने एलीशा भविष्यद्वक्ता के पास भेजा, क्योंकि एलीशा के द्वारा परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों का समाचार सुनाया गया था, और अराम के राजा ने भी यह समाचार सुना था। एलीशा ने नामान को स्वस्थ होने के लिए यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाने की सलाह दी। पहले तो नामान ने क्रोधित होकर कहा, क्या हमारे देश में यरदन से अच्छी नदियां नहीं हैं, तो मैं इस छोटी नदी में क्यों डुबकी लगाऊं? बाद में, अपने सेवकों के कहने पर, नामान ने एलीशा की आज्ञा मानी, और अन्त में उसने यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाई।

जब नामान यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाकर ठीक हो गया, तो उसने एलीशा को धन देना चाहा। लेकिन भविष्यवक्ता एलीशा के पास पहले से ही परमेश्वर के अनुग्रह, दया, विश्वास और ज्ञान की प्रचुरता थी, और उसने नामान द्वारा दी गई दौलत को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। नामान वहाँ से चला गया, परन्तु एलीशा का सेवक गेहजी लालची था; वह अपने स्वामी एलीशा के नाम पर कुछ धन मांगने के लिए नामान के रथ का पीछा किया। गेहजी बाद में ऐसे लौट आया जैसे कुछ हुआ ही न हो। एलीशा ने उससे पूछा कि वह कहाँ गया था, और गेहजी ने झूठ बोला, और कहा कि वह कहीं नहीं गया था। उसी क्षण, एलीशा ने उसके झूठ का पर्दाफाश किया, और नामान का कोढ़ गेहजी पर आ गया। इस संसार की दौलत वास्तव में हमें कुछ नहीं दे सकती, और वे किसी काम कि नहीं हैं!

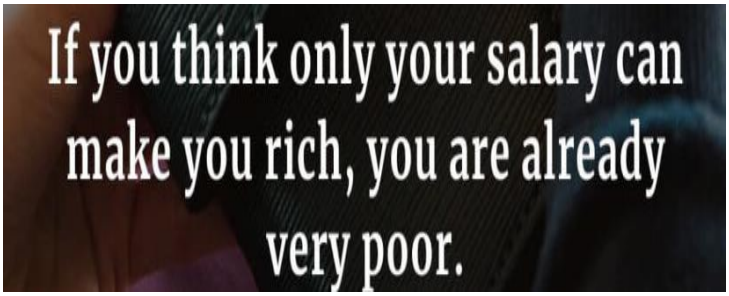

राजा सुलैमान ने केवल परमेश्वर से बुद्धि मांगी, परन्तु परमेश्वर ने सुलैमान को धन और संपत्ति के साथ–साथ वह बुद्धि भी दी जो उसने मांगी थी। हमें परमेश्वर से पूछने की आवश्यकता नहीं

है, क्योंकि वह हमें वह सब कुछ प्रदान करेंगे जिसकी हमें आवश्यकता है, जैसे परमेश्वर ने सुलैमान को उससे अधिक प्रदान किया जो उसने मांगा था। इस संसार के धन की अभिलाषा न करो, क्योंकि परमेश्वर जानते है कि हमें क्या चाहिए, और वह हमें अपनी महिमा के धन के अनुसार प्रदान करेंगे। इस दुनिया में जीवन में दुख, दर्द और कांटे जरूर हैं। यह मानव जाति पर प्रभु का अभिशाप है। लेकिन, जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं और उसके साथ जुड़े रहते हैं, तो वह हमें आशीष देंगे।

अगर परिवार में एक व्यक्ति प्रभु को स्वीकार करता है, तो पूरा परिवार धन्य हो जाएगा। हमारे जीवन में कभी किसी चीज की कमी नहीं होगी। हमारे प्रभु की कृपा और दया से ही सभी का कल्याण होगा। प्रभु से की गई हर प्रार्थना में शक्ति होती है, लेकिन इसे विश्वास में बनाया जाना चाहिए। हमारा परमेश्वर परिपूर्णता का परमेश्वर है। उनका हमारे लिए प्यार अपार है। हमारे माध्यम से, हमारा परिवार धन्य होगा, मण्डली धन्य होगी और बदले में, हमारा देश धन्य होगा।

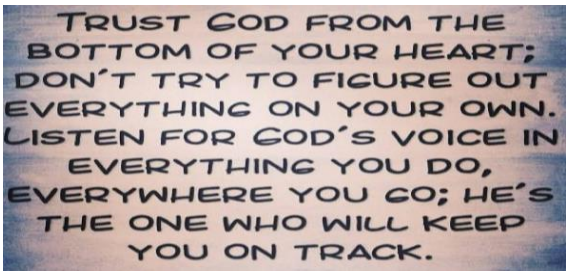

उत्पत्ति की पुस्तक में, एक मार्ग का उल्लेख किया गया है जहां पृथ्वी पर लोग एक साथ एकजुट हुए थे और स्वर्ग तक पहुंचने के लिए अपने लिए एक गुम्मट बनाने के बारे में सोचा था। प्रभु ने यह देखा और लोगों को भ्रमित करने के लिए एक दूत भेजा। उन्होंने उनकी भाषा को बदल दिया, जिससे उनकी एकात्मकता और एकता टूट गई। उत्पत्ति 11:1–7 ''सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी। उस समय लोग पूर्व की ओर चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उसमें बस गए। तब वे आपस में कहने लगे, "आओ, हम ईटें बना बना के भली भाँति आग में पकाएँ।" और उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंट से, और चूने के स्थान पर मिट्टी के गारे से काम लिया। फिर उन्होंने कहा, "आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।" जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे, तब उन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया। और यहोवा ने कहा, "मैं क्या देखता हूँ कि सब एक ही दल के हैं, और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जो कुछ वे करने का यत्न करेंगे, उसमें से कुछ भी उनके लिये अनहोना न होगा। इसलिये आओ, हम उतर के उनकी भाषा में गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।''

उस शक्ति और ताकत की कल्पना करें जो मन की एकात्मकता और एकता में है। परन्तु हमारा परमेश्वर जलन करनेवाला परमेश्वर है, और वह अपनी महिमा किसी को न देंगे। एक गलती जो लोगों ने की वह यह थी कि उन्होंने कहा, *'आओ हम अपने लिए एक नगर और एक गुम्मट बनाएं, जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुंचे।'* लोग परमेश्वर की नहीं, अपनी महिमा करना चाहते थे। हमारा परमेश्वर जलन करनेवाला परमेश्वर है, और वह मनुष्य को अपनी महिमा कभी नहीं लेने देंगे।

जब हम कुछ भी करने के बारे में सोचते हैं, तो उसे परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए न कि स्वयं की। तब हमारे पास इसे पूरा करने के लिए परमेश्वर की कृपा होगी। यदि हम आत्मा, प्रेम, विश्वास, अनुग्रह और परमेश्वर की दया में एक हो जाएं तो हम अद्भुत कार्य कर सकते हैं। फिर, हम जो कुछ भी करने

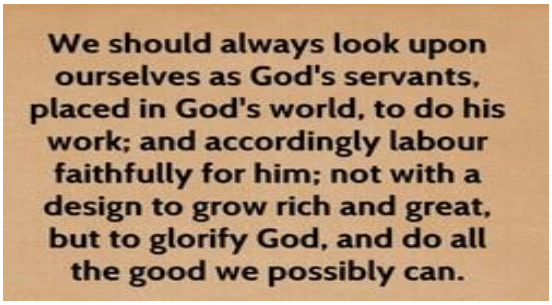

की ख्वाहिश रखते हैं, उसे हासिल करने से हमें कोई नहीं रोक सकता।

1 इतिहास 29:12 ''धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।'' परमेश्वर की धन और दौलत के आगे इस दुनिया की कोई भी दौलत कुछ भी नहीं है।

हमारा परमेश्वर अपनी महिमा कभी किसी को नहीं देंगे, कभी किसी मनुष्य को भी नहीं। यशायाह 42:8 ''मैं यहोवा हूँ, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूँगा।''

मैं प्रार्थना करती हूं कि यह संदेश कई लोगों के जीवन में आशीष लेकर आए।

पास्टर सरोज म।